ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.4, Oct. – Dec., 2024/32

शिशुपाल वधम् महाकाव्य में रैवतक–पर्वत का प्राकृतिक सौन्दर्य

कु0 अन्जू मौर्या एवं रवि कुमार चौरसिया,
https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.209

आकाश मार्ग से अवतरित मुनि नारद द्वारकापुरी में भगवान श्रीकृष्ण से मिलकर अपने को कृतार्थ समझते हुए देवेन्द्र का सन्देश सुनाते हैं, जिसे सुनकर भगवान श्रीकृष्ण द्विविधा में पड़ जाते हैं, क्योंकि एक तरफ राजसूययज्ञ में सम्मिलित होने के लिए युधिष्ठिर द्वारा आमन्त्रित किया गया है तो दूसरी तरफ संसार को पीड़ित करने वाले शिशुपाल पर अभियान करना है। अत्यन्त व्याकुल श्रीकृष्ण ने उद्धव एवं बलराम के साथ मन्त्रणा की। तत्पश्चात युद्ध का आग्रह समाप्त होने पर सौम्य श्रीकृष्ण ने चतुरङ्गिणी सेना सहित द्वारकापुरी से इन्द्रप्रस्थ की ओर प्रस्थान किया। सारथि दारूक सहित इन्द्रप्रस्थ जाते हुए श्रीकृष्ण ने मार्ग में रैवतक पर्वत को देखा। जो वर्तमान में गुजरात प्रदेश में जूनागढ़ के पास एक पर्वत है जिसे गिरनार भी कहा जाता है। इसका वर्णन पुराणों में भी प्राप्त होता है। यहीं से अर्जुन ने श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा का हरण किया था।

रैवतक पर्वत समस्त दिशाओं एवं सम्पूर्ण आकाश को आच्छादित कर विशाल भूमण्डल को व्याप्त कर तथा उन्नत शिखरों पर दीप्त चन्द्रकला से सुशोभित है। यह अपने बड़े बड़े शिलाखण्ड़ों से सूर्य के मार्ग को भी अवरुद्ध करने के लिए तत्पर विन्ध्याचल के समान आचरण करता है। अत्यधिक ऊंचा होने के कारण दुःसह ताप वाले सूर्य को धारण किये हुए है, फिर भी कमलों का उत्पत्तिस्थान होने से पद्मराग का पान करने वाले भौंरे सूर्य की उष्णता से खिन्न नहीं होते। यह इतना ऊँचा है कि यहाँ रहने वाले लोग सरलता से चन्द्रमा के पृष्ठभाग को देख सकते हैं। यह अपने चन्द्रकिरण रुपी हाथों से तारागणों को आलम्बन प्रदान करता है।

रैवतक पर्वत रत्नों की खान माना जाता है। यह इन्द्रनीलमाणियों की श्यामलता से मनोहर लताओं से युक्त है। सूर्यसारथि अरुण की लालिमा से सूर्य के घोड़ों के रंग परिवर्तित हो जाने पर यहाँ की श्यामवर्ण मरकतमणियों की कान्ति से घोड़े पुनः अपने स्वाभाविक रंग हरीतिमा को प्राप्त कर लेते हैं। यहाँ सूर्यकान्तमणियों की बाहुल्यता है, जो सूर्य के सम्पर्क में आकर आग उगलती है। **स्वभावतः गुणी व्यक्ति दूसरे के गुणों को पाकर अत्यधिक उत्कर्ष को प्राप्त होते हैं।** यहाँ मणि–माणिक्यादि रत्नों की विविध प्रभा से चन्द्रकिरणों का सम्मिश्रण होने से चन्द्रमा सहस्रकिरणत्व को प्राप्त कर लेता है। जिससे चन्द्रमा को सूर्य समझकर कमल रात्रि में भी प्रकुल्लित हो उठते हैं। इसके सौन्दर्य का जितना ही गुणगान किया जाए उतना ही कम है। **प्रयागराज के गङ्गा–यमुना का सङ्गम भी यहीं प्राप्त हो जाता है।**

एकत्रस्फटिकतटांशुभिन्न नीरा
नीलाश्मद्युतिभिदुराऽम्भसोऽपरत्र ।
कालिन्दीजलजनितश्रियः श्रयन्ते
वैदग्धीमिह सरितः सुरापगायाः।। 4/26।।

अर्थात् एक ओर स्फटिक मणि के तट की श्वेत कान्ति से शुभ्र जलवाली तो दूसरी ओर इन्द्रनीलमणि की नीली कान्ति से मिली हुई नीले जलवाली नदियाँ यहाँ गङ्गा–यमुना का सङ्गम करा देती है। इस पर्वत पर रजतमयी शुभ्र भूमि पर यत्र–तत्र बिखरे हुए हीरों के टुकड़े बादलों से बरसे हुए जल के चिरस्थायी बुलबुलों जैसे प्रतीत होते हैं।

शोध छात्रा, संस्कृत–विभाग, डॉ0–राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग, का0सु0 साकेत पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या

रैवतक पर्वत पर जल वर्षा से श्वेत धुले हुए दुपट्टे के समान कान्ति वाले मेघों को धारण करता हुआ ऐसा लगता है कि पार्वती के शरीर–स्पर्श से पोंछे गये भस्म वाले कामरिपु शिवजी हो। मेघों द्वारा जल बरसाने के कारण सर्पों की विषाग्नि वृक्षों को पीड़ित नहीं करती है।

रैवतक पर्वत के मध्यभाग में प्रवाहित होने वाली नदियॉ जब समुद्र की ओर जाती हैं तो उसके तट पर पक्षीगण नदियों की कल–कल ध्वनि के साथ मिलकर कलरव करते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो रैवतक पर्वत ही वियुक्त होती हुयी नदी रूपी कन्याओं के लिए रो रहा हो।

नदियों के जल अनेक रत्न रूपी किरणों से अनुरंजित होने से इन्द्रधनुष के समान प्रतीत होते हैं। यहां के नदियों का जल सैवालों से युक्त पवित्र एवं निर्मल होता है। यहॉ प्रभूत जलराशियों से सम्पन्न अनेक विशाल सरोवर हैं, जो वायुवेग से तरंगित रहते हैं । इनके तट सदा पक्षीगणों से युक्त रहते हैं। रैवतक पर्वत के वृक्ष रुपी कन्धों पर मयूर बैठते हैं, एवं लतारूपी भुजाओं पर सर्प लिपटे रहते हैं जिसे देखकर ऐसा लगता है कि यह अनेकों रुद्रों को धारण किया हुआ है, यह चारों ओर से दूर्वायुक्त स्वर्णमयी भूमि को धारण करता हुआ ऐसा लगता है कि मानों पीला वस्त्र धारण किये हुए हो। यहाँ तमालवृक्ष, तालवृक्ष, कीचक एवं कल्पद्रुम आदि वृक्ष पाये जाते हैं। ये सदा पुष्पों सें युक्त रहते हैं। यहाँ नीलकमल एवं लोध्रपुष्प भी विकसित होते है। सूर्य अपनी पत्नी प्रभा से जब वियुक्त होता है तो इस अवधि में इसकी पत्नी को यहाँ की औषधियॉ धरोहर के रूप में अपने पास सुरक्षित रखती है एवं प्रातःकाल सूर्य के आने पर उसे प्रत्यर्पित कर देती हैं ठीक उसी तरह जैसे– **कोई विपत्तिग्रस्त पुरुष की पत्नी की रक्षा विपत्तिकाल में एक सज्जन पुरुष करता है तथा उसके आने पर उसे लौटा देता है।**

यहॉ अनेक प्रकार के पषु भी पाये जाते है। जैसे –हाथी, चमरी–गाय, कस्तूरी–मृग। यहाँ प्रियक नामक मृगविशेष बहुतायत मात्रा में मिलते है।

रैवतक पर्वत पर कदम्ब पुष्पों से सुगन्धित एवं मेघों को उड़ाने वाली वायु चलती है वायु के निरन्तर चलते रहने से शीतल शिखरों पर बसने वाले अत्यन्त सुखी सज्जनों को आनन्द देता हुआ जल के बरसने से श्वेत मेघसमूह रुपी पर्दे को धारण करता है। यहाँ सदैव शीतल, मन्द एवं सुगन्धित वायु चलती है।

यह पर्वत देवाङ्गनाओं की निवास स्थली है। यह स्थान राक्षसों के उपद्रवों से रहित है। यह किन्नरों का भी निवास स्थान माना जाता है।

रैवतक पर्वत पर योगीजन मैत्री, करुणा, मुदिता एवं उपेक्षादि चार प्रकार की चित्तवृत्तियों को ज्ञात कर, चित्त के मलों को दूर करने, तथा अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश इन पांचों क्लेशों को नष्ट करके सबीज योग को प्राप्त करते हुए तथा प्रकृति एवं पुरुष के भिन्नत्व को समझते हुए उसको भी त्यागकर उससे भी अधिक स्वयंप्रकाशभाव में स्थित होने के इच्छुक होते हैं।

सौन्दर्य एक ऐसा दिव्य तत्व है, जो मनुष्य की चेतना को जन्म से ही आकर्षित करने लगता है। रैवतक पर्वत की सौन्दर्यता दर्शनीय है–

'उदयति विततोर्ध्वरश्मि रज्जावहिम
रुचौ हिमधाम्नि याति चास्ताम् ।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टा द्वय
'परिवारित वारणेन्द्र लीलाम् ॥ 4/20॥

श्रीकृष्ण सारथि दारुक के शब्दों में– रैवतक पर्वत अत्यन्त ऊँचा होने के कारण उसके एक ओर सूर्य उदित हो रहा है तो दूसरी ओर चन्द्रमा अस्त हो रहा है। उसकी किरणें जब पर्वत पर पड़ती हैं तो वह दोनों दिशाओं की रस्सियों में लटकते हुए दो घंटाओं वाले गजराज के समान सुशोभित होता है। ऐसा लगता है कि देवताओं ने श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के लिए इन्द्रप्रस्थ के मार्ग में सुमेर पर्वत के सुन्दर श्रृंगो से रैवतक पर्वत को सजाया हो। सारथि दारूक श्रीकृष्ण से कहता है कि शिखर के

समान दृष्टिगोचर होने वाले एवं कृष्णवर्ण के मेघों के वायु द्वारा प्रेरित ऊपर उठने से ऐसा मालूम पड़ता है कि यह आपके स्वागतार्थ ही अभ्युत्थान कर रहा है।

सौन्दर्य को सुधा कहा गया है और प्रत्येक क्षण यह परिवर्तित होता रहता है। मानव इस संसार के कण कण में सौन्दर्य की मनोहरी छवि को विस्मय विमुग्ध होकर निहारता रहता है । बार–बार देखे जाने पर भी रैवतक पहले कभी न देखे गये के समान श्रीकृष्ण को आष्चर्यचकित कर देता है। क्योंकि कहा भी गया है –

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति

तदेव रूपं रमणीयतायाः ।। 4/17।।

अर्थात्– **क्षण–क्षण में जो वस्तु नवीनता को धारण करे, वहीं रमणीयता का स्वरूप है।**

सन्दर्भग्रन्थ–सूची ––

शिशुपालवधम्–4.17,4.20,4.26

भागवतपुराण – 9,22,29,33

विष्णुपुराण 4.44,35

योगसूत्र 2.3,2.5–9

सांख्य– 64